



Mr. Manpreet Singh

09 Sep 1999

03:30 PM

Ludhiana

Model: Web-MyKundli

Order No: 119414601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 09/09/1999
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 15:30:01 घंटे
इष्ट _____: 23:27:38 घटी
स्थान _____: Ludhiana
राज्य _____: Punjab
देश _____: India

अक्षांश _____: 30:56:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:52:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 15:03:29 घंटे
वेलान्तर _____: 00:02:27 घंटे
साम्पातिक काल _____: 14:15:32 घंटे
सूर्योदय _____: 06:06:57 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:40:35 घंटे
दिनमान _____: 12:33:38 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 22:26:21 सिंह
लग्न के अंश _____: 24:21:42 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: पू०फाल्गुनी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: सिद्ध
करण _____: चतुष्पाद
गण _____: मनुष्य
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: मो-मोहन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India
Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1921	भाद्रपद	18
पंजाबी	संवत : 2056	भाद्रपद	24
बंगाली	सन् : 1406	भाद्रपद	23
तमिल	संवत : 2056	आवनी	24
केरल	कोल्लम : 1175	चिंगम	24
नेपाली	संवत : 2056	भाद्रपद	24
चैत्रादि	संवत : 2056	भाद्रपद	कृष्ण 15
कार्तिकादि	संवत : 2056	श्रावण	कृष्ण 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 15
 तिथि समाप्ति काल _____ : 27:32:18
 जन्म तिथि _____ : 15
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मघा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 10:14:55 घंटे
 जन्म योग _____ : पू०फाल्गुनी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
 योग समाप्ति काल _____ : 17:40:53 घंटे
 जन्म योग _____ : सिद्ध
 सूर्योदय कालीन करण _____ : चतुष्पाद
 करण समाप्ति काल _____ : 15:50:50 घंटे
 जन्म करण _____ : चतुष्पाद
 भयात _____ : 13:07:43
 भभोग _____ : 60:13:52
 भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 15 वर्ष 7 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____ : ज्येष्ठ
 तिथि _____ : 3-8-13
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : मूल
 योग _____ : धृति
 करण _____ : बव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मार्जार
 लग्न _____ : मीन
 सूर्य _____ : धनु
 चन्द्र _____ : मकर
 मंगल _____ : मकर
 बुध _____ : तुला
 गुरु _____ : कुम्भ
 शुक्र _____ : मीन
 शनि _____ : वृश्चिक
 राहु _____ : मेष

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

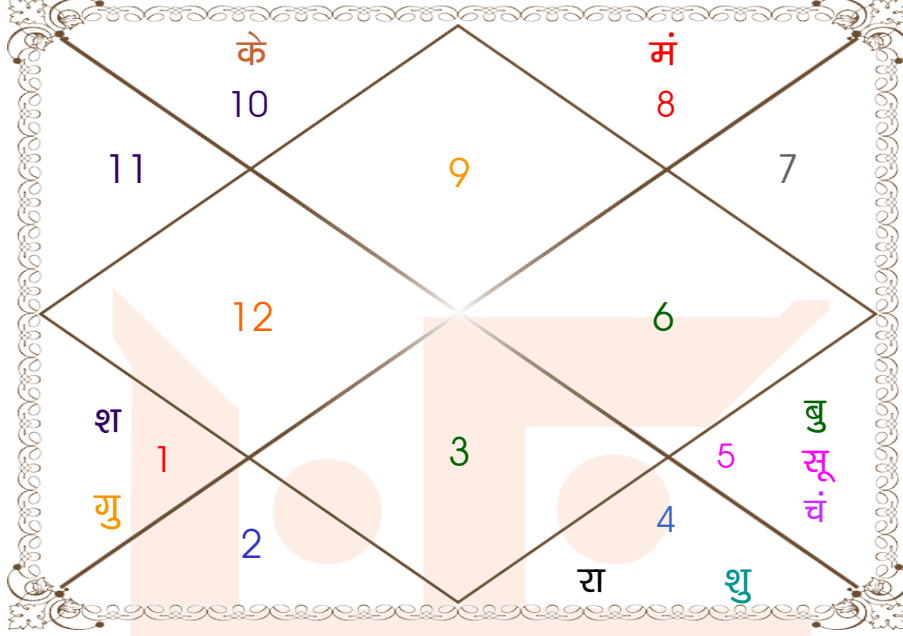
#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

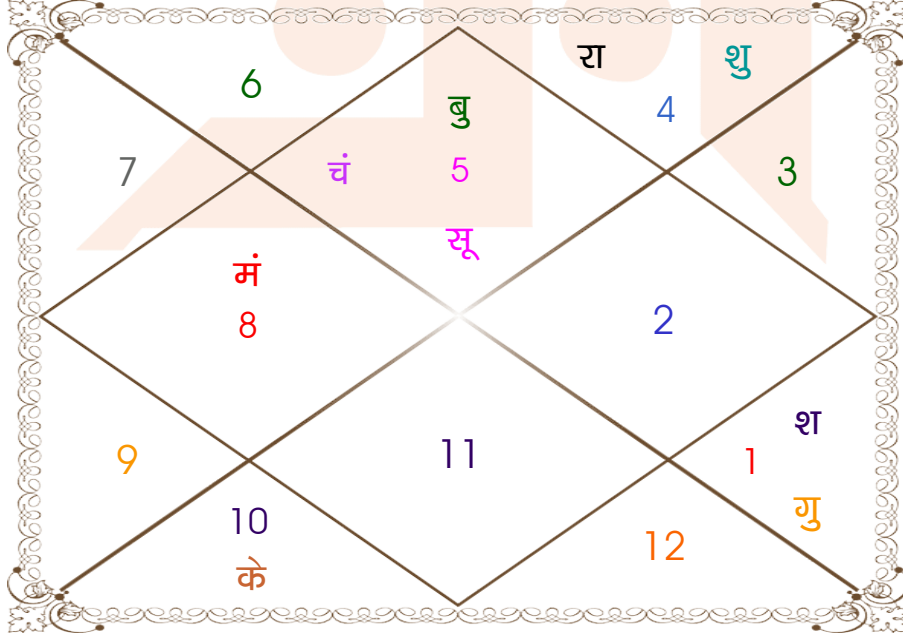
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	श गु		
			रा शु
के			बु सू चं
ल	मं		

लग्न कुंडली

	श गु		
रा शु			के
चं बु	सू		ल
		मं	

विंशोत्तरी
शुक्र 15वर्ष 7मा 9दि
शुक्र

09/09/1999

21/04/2115

शुक्र	20/04/2015
सूर्य	19/04/2021
चन्द्र	20/04/2031
मंगल	19/04/2038
राहु	19/04/2056
गुरु	19/04/2072
शनि	20/04/2091
बुध	20/04/2108
केतु	21/04/2115

योगिनी
उल्का 4वर्ष 8मा 5दि
भामरी

16/05/2025

16/05/2029

भामरी	25/10/2025
भद्रिका	16/05/2026
उल्का	15/01/2027
सिद्धा	26/10/2027
संकटा	14/09/2028
मंगला	25/10/2028
पिंगला	14/01/2029
धान्या	16/05/2029

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

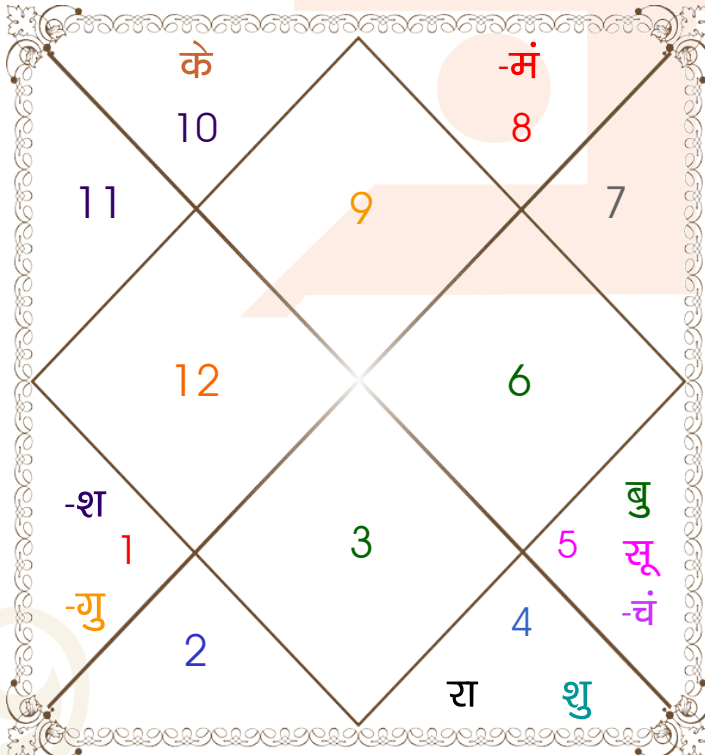
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	24:21:42	371:18:12	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
सूर्य			सिंह	22:26:21	00:58:18	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	स्वराशि
चंद्र			सिंह	16:15:37	13:21:02	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	10:20:19	00:38:36	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	स्वराशि
बुध		अ	सिंह	23:10:10	01:53:08	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
गुरु	व		मेष	10:44:55	00:03:02	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	शनि	मित्र राशि
शुक्र	व		कर्क	24:59:20	00:03:47	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
शनि	व		मेष	23:14:12	00:01:06	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	नीच राशि
राहु	व		कर्क	18:50:57	00:03:22	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	18:50:57	00:03:22	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	19:45:27	00:01:53	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	केतु	---
नेप	व		मक	08:03:16	00:01:03	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो			वृश्चि	14:00:51	00:00:42	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			तुला	12:21:22	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	शनि	--

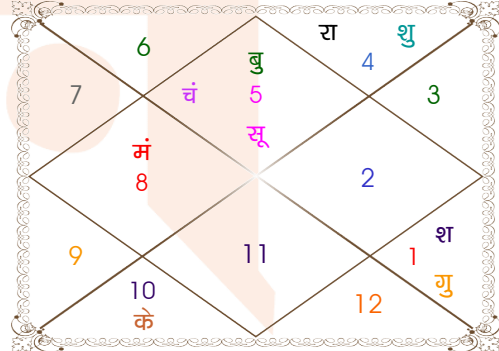
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:50:57

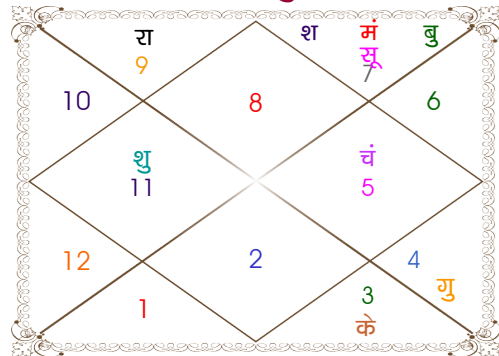
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 12:21:39	धनु 24:21:42
2	मकर 12:21:39	कुम्भ 00:21:35
3	कुम्भ 18:21:32	मीन 06:21:29
4	मीन 24:21:25	मेष 12:21:22
5	मेष 24:21:25	वृष 06:21:29
6	वृष 18:21:32	मिथुन 00:21:35
7	मिथुन 12:21:39	मिथुन 24:21:42
8	कर्क 12:21:39	सिंह 00:21:35
9	सिंह 18:21:32	कन्या 06:21:29
10	कन्या 24:21:25	तुला 12:21:22
11	तुला 24:21:25	वृश्चिक 06:21:29
12	वृश्चिक 18:21:32	धनु 00:21:35

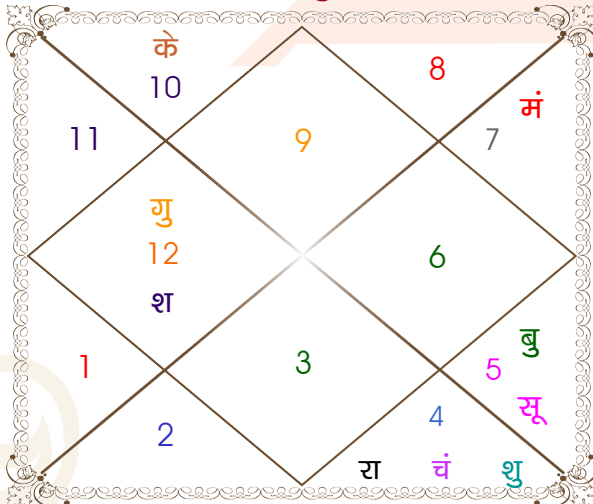
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	24:21:42
2	कुम्भ	02:38:04
3	मीन	10:47:12
4	मेष	12:21:22
5	वृष	07:49:47
6	मिथुन	00:33:11
7	मिथुन	24:21:42
8	सिंह	02:38:04
9	कन्या	10:47:12
10	तुला	12:21:22
11	वृश्चिक	07:49:47
12	धनु	00:33:11

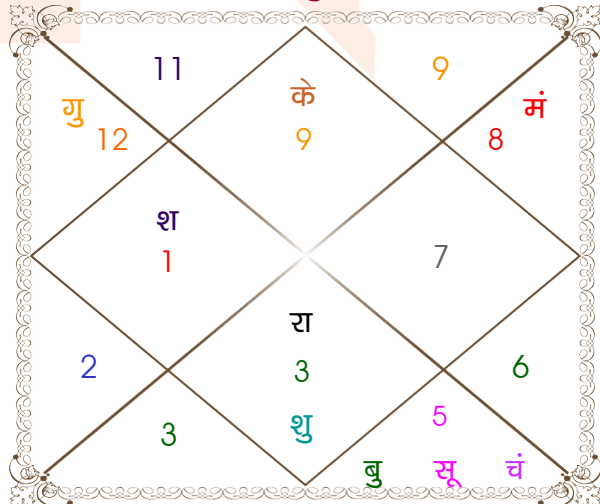
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 15 वर्ष 7 मास 9 दिन

शुक्र 20 वर्ष 09/09/1999 20/04/2015	सूर्य 6 वर्ष 20/04/2015 19/04/2021	चंद्र 10 वर्ष 19/04/2021 20/04/2031	मंगल 7 वर्ष 20/04/2031 19/04/2038	राहु 18 वर्ष 19/04/2038 19/04/2056
00/00/0000	सूर्य 07/08/2015	चंद्र 17/02/2022	मंगल 16/09/2031	राहु 31/12/2040
09/09/1999	चंद्र 06/02/2016	मंगल 19/09/2022	राहु 03/10/2032	गुरु 26/05/2043
चंद्र 19/04/2001	मंगल 13/06/2016	राहु 19/03/2024	गुरु 09/09/2033	शनि 01/04/2046
मंगल 19/06/2002	राहु 07/05/2017	गुरु 19/07/2025	शनि 19/10/2034	बुध 18/10/2048
राहु 19/06/2005	गुरु 24/02/2018	शनि 18/02/2027	बुध 16/10/2035	केतु 06/11/2049
गुरु 18/02/2008	शनि 06/02/2019	बुध 19/07/2028	केतु 13/03/2036	शुक्र 06/11/2052
शनि 20/04/2011	बुध 13/12/2019	केतु 17/02/2029	शुक्र 13/05/2037	सूर्य 30/09/2053
बुध 17/02/2014	केतु 19/04/2020	शुक्र 19/10/2030	सूर्य 18/09/2037	चंद्र 01/04/2055
केतु 20/04/2015	शुक्र 19/04/2021	सूर्य 20/04/2031	चंद्र 19/04/2038	मंगल 19/04/2056
गुरु 16 वर्ष 19/04/2056 19/04/2072	शनि 19 वर्ष 19/04/2072 20/04/2091	बुध 17 वर्ष 20/04/2091 20/04/2108	केतु 7 वर्ष 20/04/2108 21/04/2115	शुक्र 20 वर्ष 21/04/2115 00/00/0000
गुरु 07/06/2058	शनि 23/04/2075	बुध 15/09/2093	केतु 16/09/2108	शुक्र 20/08/2118
शनि 18/12/2060	बुध 31/12/2077	केतु 12/09/2094	शुक्र 16/11/2109	सूर्य 20/08/2119
बुध 26/03/2063	केतु 09/02/2079	शुक्र 13/07/2097	सूर्य 24/03/2110	चंद्र 10/09/2119
केतु 01/03/2064	शुक्र 10/04/2082	सूर्य 20/05/2098	चंद्र 23/10/2110	00/00/0000
शुक्र 31/10/2066	सूर्य 23/03/2083	चंद्र 19/10/2099	मंगल 21/03/2111	00/00/0000
सूर्य 19/08/2067	चंद्र 21/10/2084	मंगल 16/10/2100	राहु 08/04/2112	00/00/0000
चंद्र 18/12/2068	मंगल 30/11/2085	राहु 06/05/2103	गुरु 15/03/2113	00/00/0000
मंगल 24/11/2069	राहु 06/10/2088	गुरु 11/08/2105	शनि 23/04/2114	00/00/0000
राहु 19/04/2072	गुरु 20/04/2091	शनि 20/04/2108	बुध 21/04/2115	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 15 वर्ष 7 मा 21 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य
19/07/2025	18/02/2027	19/07/2028	17/02/2029	19/10/2030
18/02/2027	19/07/2028	17/02/2029	19/10/2030	20/04/2031
शनि 19/10/2025	बुध 02/05/2027	केतु 01/08/2028	शुक्र 30/05/2029	सूर्य 28/10/2030
बुध 09/01/2026	केतु 01/06/2027	शुक्र 05/09/2028	सूर्य 29/06/2029	चंद्र 12/11/2030
केतु 12/02/2026	शुक्र 26/08/2027	सूर्य 16/09/2028	चंद्र 19/08/2029	मंगल 23/11/2030
शुक्र 19/05/2026	सूर्य 21/09/2027	चंद्र 03/10/2028	मंगल 23/09/2029	राहु 20/12/2030
सूर्य 17/06/2026	चंद्र 03/11/2027	मंगल 16/10/2028	राहु 24/12/2029	गुरु 14/01/2031
चंद्र 04/08/2026	मंगल 04/12/2027	राहु 17/11/2028	गुरु 15/03/2030	शनि 12/02/2031
मंगल 07/09/2026	राहु 19/02/2028	गुरु 15/12/2028	शनि 19/06/2030	बुध 09/03/2031
राहु 03/12/2026	गुरु 28/04/2028	शनि 18/01/2029	बुध 13/09/2030	केतु 20/03/2031
गुरु 18/02/2027	शनि 19/07/2028	बुध 17/02/2029	केतु 19/10/2030	शुक्र 20/04/2031
मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध
20/04/2031	16/09/2031	03/10/2032	09/09/2033	19/10/2034
16/09/2031	03/10/2032	09/09/2033	19/10/2034	16/10/2035
मंगल 28/04/2031	राहु 12/11/2031	गुरु 18/11/2032	शनि 12/11/2033	बुध 09/12/2034
राहु 21/05/2031	गुरु 02/01/2032	शनि 11/01/2033	बुध 09/01/2034	केतु 30/12/2034
गुरु 10/06/2031	शनि 03/03/2032	बुध 28/02/2033	केतु 01/02/2034	शुक्र 01/03/2035
शनि 03/07/2031	बुध 26/04/2032	केतु 20/03/2033	शुक्र 10/04/2034	सूर्य 19/03/2035
बुध 24/07/2031	केतु 19/05/2032	शुक्र 16/05/2033	सूर्य 30/04/2034	चंद्र 18/04/2035
केतु 02/08/2031	शुक्र 22/07/2032	सूर्य 02/06/2033	चंद्र 03/06/2034	मंगल 09/05/2035
शुक्र 27/08/2031	सूर्य 10/08/2032	चंद्र 30/06/2033	मंगल 26/06/2034	राहु 03/07/2035
सूर्य 03/09/2031	चंद्र 11/09/2032	मंगल 20/07/2033	राहु 26/08/2034	गुरु 20/08/2035
चंद्र 16/09/2031	मंगल 03/10/2032	राहु 09/09/2033	गुरु 19/10/2034	शनि 16/10/2035
मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र	राहु - राहु
16/10/2035	13/03/2036	13/05/2037	18/09/2037	19/04/2038
13/03/2036	13/05/2037	18/09/2037	19/04/2038	31/12/2040
केतु 25/10/2035	शुक्र 23/05/2036	सूर्य 20/05/2037	चंद्र 06/10/2037	राहु 14/09/2038
शुक्र 19/11/2035	सूर्य 14/06/2036	चंद्र 30/05/2037	मंगल 18/10/2037	गुरु 24/01/2039
सूर्य 26/11/2035	चंद्र 19/07/2036	मंगल 07/06/2037	राहु 19/11/2037	शनि 29/06/2039
चंद्र 09/12/2035	मंगल 13/08/2036	राहु 26/06/2037	गुरु 18/12/2037	बुध 16/11/2039
मंगल 17/12/2035	राहु 16/10/2036	गुरु 13/07/2037	शनि 21/01/2038	केतु 12/01/2040
राहु 09/01/2036	गुरु 12/12/2036	शनि 02/08/2037	बुध 20/02/2038	शुक्र 24/06/2040
गुरु 29/01/2036	शनि 17/02/2037	बुध 21/08/2037	केतु 04/03/2038	सूर्य 13/08/2040
शनि 21/02/2036	बुध 19/04/2037	केतु 28/08/2037	शुक्र 09/04/2038	चंद्र 03/11/2040
बुध 13/03/2036	केतु 13/05/2037	शुक्र 18/09/2037	सूर्य 19/04/2038	मंगल 31/12/2040

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

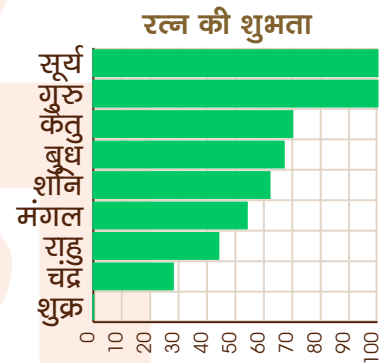
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	100%	भाग्योदय
पुखराज	गुरु	100%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, सुख
लहसुनिया	केतु	70%	धन, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	67%	भाग्योदय, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	62%	सन्तति सुख, धन, पराक्रम
मूंगा	मंगल	54%	कम खर्च, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	44%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
मोती	चंद्र	28%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	20/04/2015	87%	3%	54%	73%	100%	25%	69%	53%	77%
सूर्य	19/04/2021	100%	41%	61%	67%	100%	0%	50%	19%	58%
चंद्र	20/04/2031	100%	52%	54%	73%	100%	0%	62%	19%	58%
मंगल	19/04/2038	100%	41%	67%	55%	100%	0%	62%	19%	77%
राहु	19/04/2056	87%	3%	34%	67%	100%	12%	69%	59%	58%
गुरु	19/04/2072	100%	41%	61%	55%	100%	0%	62%	44%	70%
शनि	20/04/2091	87%	3%	34%	73%	100%	12%	75%	53%	58%
बुध	20/04/2108	100%	3%	54%	80%	100%	12%	62%	44%	70%
केतु	21/04/2115	87%	3%	61%	67%	100%	12%	50%	19%	83%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
सम
शुभ
अशुभ
सम

क्षेत्र

दुर्घटना
बदनामी
व्यावसाय
व्यय
सुख

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।

स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी। सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगे।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में आप

उन्नतिशील रहेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करावेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरों से सहमत ही रहेंगे।

इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मि, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(19/04/2021 - 20/04/2031)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुंडली में यह 19/04/2021 को आरंभ और 20/04/2031 को समाप्त होगी।

चन्द्र नवम् भाव में अवस्थित है। अतः अपने दशा काल में आपको उत्तम स्वास्थ्य, धन तथा समृद्धि प्रदान करेगा और आप उदार होंगे। आपका झुकाव ईश्वर की ओर होगा क्योंकि नवम भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा दार्शनिक लाभ, अन्तर्ज्ञान, बलिदान, दान-पुण्य के कार्य, स्वप्न, दृष्टि, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का सूचक है।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी चन्द्र नवम् भाव में अवस्थित है। यह अपने भाव की रक्षा का रहा है और कोई अशुभ शक्ति इसका नाश नहीं कर सकती। इस दशा-काल में किसी बड़ी बीमारी या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है और एक सुखमय तथा क्रियाशील जीवन बीतेगा। आप सामान्य ढंग से अपने कर्तव्यों तथा दैनिक कार्यों का सम्पादन करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

इस दशा काल में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और आप उसका विस्तार करेंगे। आप पिता की सहायता तथा समर्थन से, जो स्वयं भी समृद्धिशाली होंगे, अपनी संपत्तियों की वृद्धि करेंगे। इस अवधि में आपकी विदेश-यात्रा की सम्भावनाएं हैं और अपनी सम्पत्ति का विस्तार करने के अवसर आपको मिलेंगे।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप एक-सुखी व्यक्ति होंगे और इस अवधि में सन्तुष्ट रहेंगे। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे और यदि व्यवसायी हैं तो न्यायप्रिय और धर्मपरायण होने के कारण आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे और आपके सहकर्मी और श्रेष्ठ तथा अधीनस्थ व्यक्ति आपकी सराहना करेंगे। व्यापार के क्रम में आप विदेश-यात्रा का सकते हैं और वहां भी आप ख्याति अर्जित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण व शांतिपूर्ण होगा। आपकी पत्नी आपका सहयोग तथा सहायता करेंगी। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी रहेंगे और माता-पिता, खासकर पिता, की आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय व उपयोगी बनाने में भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षण-वृत्ति (छात्रवृत्ति) में आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और सफलता आपके कदम चूमेगी। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लें तो उसमें भी सफल होंगे।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - गुरु
(19/03/2024 - 19/07/2025)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 19/04/2021 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 19/03/2024 को प्रारंभ होकर 19/07/2025 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। बृहस्पति शुभग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर गुरु आपकी कुंडली के 9, 11, और लग्न भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और बुद्धिमान होंगे। अपने उच्चाधिकारी के सलाहकार बन सकते हैं। भद्र लोगों से मित्रता होगी। वाहन सुख रहेगा। समाज में सम्मान बढ़ेगा। ईश्वर में आस्था में वृद्धि होगी। संतान आज्ञाकारी होगी, मित्र सम्मान करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19,000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि
(19/07/2025 - 18/02/2027)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 19/04/2021 को प्रारंभ हुई और 20/04/2031 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 19/07/2025 को प्रारंभ होकर 18/02/2027 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 7, 11 और 2 भावों पर दृष्टि द्वारा प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप निर्बल, निर्धन और तिरस्कृत हो सकते हैं। मित्रों और संबंधियों से विवाद हो सकता है। घरेलू जीवन में कष्ट आ सकते हैं। भाग्य में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। हर कार्य में सावधानी की आवश्यकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए आटे की गोलियां मछलियों को तालाब या मछलीघर आदि में दें। भोजन से पहले, रोटी का पहला कौर गाय के लिए सुरक्षित रखें। शिव की आराधना प्रतिदिन करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - बुध
(18/02/2027 - 19/07/2028)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist

#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India

Mobile No: 98140-28644

Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

आपके लिए चंद्र महादशा 19/04/2021 को प्रारंभ हुई थी और 20/04/2031 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 18/02/2027 को प्रारंभ होकर 19/07/2028 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध नवम भाव में स्थित होकर कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अवधि में आप ज्ञान और धन अर्जित करेंगे। आपका दृष्टिकोण वैज्ञानिक रहेगा। आप देश-विदेश में व्याख्यान दे सकते हैं। विदेश से आपके लिए आमंत्रण आ सकते हैं। पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
(19/07/2028 - 17/02/2029)**

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 19/04/2021 को प्रारंभ हुई और 20/04/2031 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 19/07/2028 को प्रारंभ होकर 17/02/2029 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आपको अग्नि, चोरी, मुकदमे या जुए आदि से धनहानि हो सकती है, कर्ज चढ़ सकता है। नेत्ररोग या शरीर के दायें भाग में कोई कष्ट हो सकता है। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. श्वान को भोजन दें।
2. घर पर भूरा श्वान पालें।
3. गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र
(17/02/2029 - 19/10/2030)**

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 19/04/2021 को प्रारंभ होकर 20/04/2031 को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह

17/02/2029 को प्रारंभ होकर 19/10/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली होंगे। धन-धान्य से परिपूर्ण रहेंगे। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। भावनात्मक समस्याओं से सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

